अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

अरब सागर के किनारे अध्यात्म के महासागर ने बहाई ज्ञानगंगा

-लगभग बारह किलोमीटर का विहार कर आचार्यश्री पहुंचे माता अमृतानंदमयी मठ परिसर

-सागर किनारे आचार्यश्री ने प्रवाहित की ज्ञानगंगा तो श्रद्धालुओं ने लगाए गोते

-संसार सागर को तरने की आचार्यश्री ने दी पावन प्रेरणा

-अपरान्ह् में मठ के साधकों की जिज्ञासाओं का किया समाधान

11.03.2019 परयकडवु, कोल्लम (केरल): पश्चिम दिशा की ओर अपनी अथाह जलराशियों पर इठलाता, इतराता, लहराता और मेघ गर्जना करता अरब सागर तो उसी के तट पर अध्यात्म जगत के महासागर, आगमवाणी के व्याख्याता, महातपस्वी, अखण्ड परिव्राजक, मानवता के मसीहा आचार्यश्री महाश्रमणजी उतने ही शांत, प्रशांत, समताभाव से भावित और प्रसन्नचित्त होकर श्रद्धालुओं को अपनी ज्ञानगंगा के माध्यम से अभिसिंचन प्रदान कर रहे थे। ऐसा लग रहा था मानों आचार्यश्री श्रद्धालुओं के ही माध्यम से सागर को भी शांत, और गंभीर बने रहने की प्रेरणा प्रदान कर रहे थे। जी हां! यह अद्भुत और अद्वितीय दृश्य सोमवार को केरल राज्य के कोल्लम जिले के परयकडवु स्थित माता अमृतानंदमयी मठ परिसर में देखने को मिला। यह दृश्य जिसने भी देखा मानों वह हर्षविभोर था।

सोमवार को प्रातः अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी अहिंसा यात्रा के साथ अलप्पुझा जिले के कायमकुलम स्थित गवर्नमेंट वुमेन पाॅलीटेक्निक काॅलेज से मंगल प्रस्थान किया। आचार्यश्री का आज का विहार बिल्कुल ग्रामीण मार्ग से हो रहा था, किन्तु वह मार्ग साफ और स्वच्छ होने के साथ-साथ संकरा था तो दोनों ओर वृक्ष समूहों से मानों अच्छादित भी था। अक्सर विहार के दौरान धरती को तपा देने वाली सूर्य की किरणें इस मार्ग से प्रायः अछूती ही रहीं। आचार्यश्री कुछ किलोमीटर के विहार के पश्चात ही अलप्पुझा जिले की सीमा को अतिक्रान्त कर कोल्लम जिले की सीमा में पावन प्रवेश किया। आचार्यश्री मार्ग में कोल्लम-पट्टकुरम वाटरवे पर बने पुल से पधारे। इस वाटर वे में अनेकानेक सजी-धजी नावें यात्रियों को बोटिंग करवाने के लिए तैयार खड़ी थीं। आगे का आचार्यश्री का विहार बिल्कुल अरब सागर के तट पर मानों हो रहा था। भारत के भौगोलिक स्थिति के अनुसार के भारत के प्रायः संपूर्ण पश्चिमी भाग में फैला अरब सागर लहरा रहा था। दूसरी ओर नारियल आदि के वृक्ष कतारबद्ध रूप से ऐसे खड़े थे मानों महातपस्वी की अभिवन्दना कर रहे हों। सागर से उठने वाले लहरों का वेग मानों महातपस्वी के चरणरज को छूने के लिए लालायित नजर आ रहे थे, किन्तु वे पत्थरों से टकराकर अपनी सीमा में ही समाप्त हो रहे थे। फिर भी उनके निरंतर उठने का क्रम जारी था। कुल लगभग बारह किलोमीटर का विहार कर आचार्यश्री परयकडवु स्थित माता अमृतानंदमयी मठ परिसर के निकट पधारे तो आश्रम की ओर से अनेकानेक साधकों आदि ने आचार्यश्री का भावभीना स्वागत किया। वहीं केरल के पारम्परिक नर्तक जो एक विशिष्ट प्रकार की वस्त्र से सुसज्जीत होते हैं, उन्होंने भी आचार्यश्री के दर्शन कर पावन आशीर्वाद किए।

आचार्यश्री मठ परिसर में पधारे। परिसर के बाहरी भाग में सागर तट के किनारे पर ही आज का प्रवचन कार्यक्रम भी समायोजित था। आचार्यश्री ने उपस्थित श्रद्धालुओं को अपनी अमृतवाणी से पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि आदमी जिस दुनिया में जी रहा है, वहां दुःख भी मिलता है और कभी-कभी सुखानुभूति भी होती है। जन्म लेना, बुढापा, बीमारी और मृत्यु दुःख है। इस दुःखयुक्त संसार से छुटकारा पाने के लिए आदमी को साधना करने का प्रयास करना चाहिए। अध्यात्म साधना का मूल लक्ष्य ही शाश्वत सुख और पूर्ण रूपेण दुःखमुक्ति को प्राप्त करना होता है। आदमी अपने जीवन में साधना-तपस्या करे, अहिंसा, मैत्री आदि भावों को पुष्ट बनाने का प्रयास करे तो वह दुःखमुक्ति की दिशा में आगे बढ़ सकता है। आचार्यश्री के मंगल प्रवचन के पश्चात् मठ के सदस्य श्री उन्नी ने आचार्यश्री के स्वागत में अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी। आचार्यश्री ने समुपस्थित साधकों को अंग्रेजी भाषा में पावन संबोध प्रदान किया तो मुनि कुमारश्रमणजी ने आचार्यश्री के विषय में अवगति प्रदान की।

अपराह्न लगभग तीन बजे मठ के पचासों साधक आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में उपस्थित हुए। उन्होंने आचार्यश्री के समक्ष अपनी जिज्ञासाएं प्रस्तुत कीं तो आचार्यश्री ने समाधान के साथ-साथ पावन पाथेय भी प्रदान किया। आचार्यश्री ने साधकों को कुछ समय तक प्रेक्षाध्यान का प्रयोग भी कराया। जैसे-जैसे साधकों की जिज्ञासाओं का आचार्यश्री समाधान कर रहे थे, साधकों के चेहरे पर उभरते श्रद्धा भावों को स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था।